कथा सरिता

विवेक शक्ति

एक विदेशी महिला ने विवेकानंद से कहा - मैं आपसे शादी करना चाहती हूँ।

विवेकानंद ने पूछा - क्यों देवी? पर मैं तो ब्रह्मचारी हूँ।

महिला ने जवाब दिया - क्योंकि मुझे आपके जैसा ही एक पुत्र चाहिए, जो पूरी दुनिया में मेरा नाम रोशन करे और वो केवल आपसे शादी करके ही मिल सकता है मुझे।

विवेकानंद कहते हैं - इसका और एक उपाय है। विदेशी महिला पूछती है - क्या?

विवेकानंद ने मुस्कराते हुए कहा - आप मुझे ही अपना पुत्र मान लीजिये और आप मेरी माँ बन जाइए, ऐसे में आपको मेरे जैसा पुत्र भी मिल जाएगा और मुझे अपना ब्रह्मचर्य भी नहीं तोड़ना पड़ेगा। महिला हतप्रभ होकर विवेकानंद को ताकने लगी। ये होती है महान आत्माओं की विचार धारा।

'पूरे समुंदर का पानी भी एक जहाज को नहीं डुबा सकता, जब तक पानी को जहाज अंदर न आने दे।

इसी तरह दुनिया का कोई भी नकारात्मक विचार आपको नीचे नहीं गिरा सकता, जब तक आप उसे अपने अंदर आने की अनुमति न दें'।

शांत मन से सबकुछ

एक बार की बात है, एक किसान था, जिसने अपनी घड़ी चारे से भरे हुए बोड़े में खो दी थी। वह घड़ी बहुत कीमती थी, इसलिए किसान ने उसकी बहुत खोजबीन की पर वह घड़ी नहीं मिली। बाहर कुछ बच्चे खेल रहे थे और किसान को दूसरा काम भी था, उसने सोचा क्यों न मैं इन बच्चों से घड़ी को खोजने के लिए कहूँ। उसने बच्चों से कहा कि जो भी बच्चा उसे घड़ी खोजकर देगा उसे वह अच्छा ईनाम देगा। यह सुनकर बच्चे ईनाम के लालच में बाड़े के अंदर दौड़ गए और यहाँ वहाँ घड़ी ढूंढ़ने लगे। लेकिन किसी भी बच्चे को घड़ी नहीं मिली। तब एक बच्चे ने किसान के पास जाकर कहा कि वह घड़ी खोजकर ला सकता है, पर सारे बच्चों को बाड़े से बाहर जाना होगा।

किसान ने उसकी बात मान ली और किसान तथा बाकी सभी बच्चे बाड़े के बाहर चले गए। कुछ देर बाद बच्चा लौट आया और वह कीमती घड़ी उसके हाथ में थी। किसान अपनी घड़ी देखकर बहुत खुश और आश्चर्यचकित हो गया। उसने बच्चे से पूछा, 'तुमने घड़ी किस तरह खोजी, जबकि बाकी बच्चे और खुद इस काम में नाकाम हो चुका था।' बच्चे ने जवाब दिया, 'मैंने कुछ नहीं किया, बस शांत मन से ज़मीन पर बैठ गया और घड़ी की आवाज़ सुनने की कोशिश करने लगा, क्योंकि बाड़े में शांति थी, इसलिए मैंने उसकी आवाज़ सुन ली और उसी दिशा में देखा।'

एक शांत दिमाग बेहतर सोच सकता है एक थके हुए दिमाग की तुलना में। दिन में कुछ समय के लिए आँखें बंद करके शांति से बैठिये। अपने मस्तिष्क को शांत होने दीजिये, फिर देखिये वह आपकी ज़िन्दगी को किस तरह से व्यवस्थित कर देता है। आत्मा हमेशा अपने आपको ठीक करना जानती है, बस मन को शांत करना ही चुनौती है।

दिल ना दुखायें

एक राजमहल में कामवाली और उसका बेटा काम करते थे। एक दिन राजमहल में कामवाली के बेटे को हीरा मिलता है। वो माँ को बताता है...।

कामवाली होशियारी से वो हीरा बाहर फेंककर कहती है, ये काँच है हीरा नहीं...।

कामवाली घर जाते वक्त चुपके से वो हीरा उठाके ले जाती है। वह सुनार के पास जाती है। सुनार समझ जाता है कि इसको कहीं मिला होगा, ये असली है या नकली इसे पता नहीं, इसलिए पूछने आ गई। सुनार भी होशियार था। वो हीरा बाहर फेंककर कहता है, ये काँच है हीरा नहीं। कामवाली लौट जाती है। सुनार वो हीरा चुपके से उठाकर जौहरी के पास ले जाता है।

जौहरी हीरा पहचान लेता है। अनमोल हीरा देखकर उसकी नियत बदल जाती है। वो भी हीरा बाहर फेंक कर कहता है, ये काँच है हीरा नहीं। जैसे ही जौहरी हीरा बाहर फेंकता है..., उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं...। यह सब एक राहगीर निहार रहा था। वह हीरे के पास जाकर पूछता है, कामवाली और सुनार ने दो बार तुम्हें फेंका... तब तो तुम नहीं टूटे, फिर अब कैसे टूटे? हीरा बोला, कामवाली और सुनार ने दो बार मुझे फेंका, क्योंकि वो मेरी असलियत से अनजान थे। लेकिन जौहरी तो मेरी असलियत जानता था, तब भी उसने मुझे बाहर फेंक दिया। यह दु:ख मैं सहन न कर सका, इसलिए मैं टूट गया। ऐसा ही हम मनुष्यों के साथ भी होता है। जो लोग आपको जानते हैं, उसके बावजूद भी आपका दिल दु:खाते हैं, तब यह बात आप सहन नहीं कर पाते। इसलिए कभी भी अपने स्वार्थ के लिए करीबियों का दिल ना तोड़ें...।

हमारे आसपास भी बहुत से लोग हीरे जैसे होते हैं! उनकी दिल और भावनाओं को कभी भी मत दुखाएं...और ना ही उनके अच्छे गुणों के टुकड़े करिये...।

जो बोया वो काटा

बुद्ध का एक शिष्य मौग्लायन रास्ते से गुज़र रहा था। उसे कहीं से ज़ोर से एक पत्थर आकर लगता है, उसके पैर से खून बहने लगता है।

मौग्लायन आकाश की तरफ हाथ जोड़कर किसी आनंद भाव में लीन हो जाता है। उसके चारो तरफ भिक्षु हैरानी में खड़े रह जाते हैं।

मौग्लायन जब अपने ध्यान से वापस लौटता है, तो वे उससे पूछते हैं, आप क्या कर रहे थे? पैर में चोट लगी, पत्थर लगा, खून बहा और आप कुछ ऐसे हाथ जोड़े थे जैसे किसी को धन्यवाद दे रहे हों!

मौग्लायन ने कहा, बस यह एक ही मेरा विष का बीज और बाकी रह गया था। मारा था किसी को पत्थर कभी, आज उससे छुटकारा हो गया।

आज नमस्कार करके धन्यवाद दे दिया है प्रभु को कि अब मेरे कुछ भी बोये हुए बीज न बचें। यह आखिरी फसल समाप्त हो गई।

लेकिन अगर आपको रास्ते पर चलते वक्त पत्थर पैर में लग जाये, तो इसकी बहुत कम संभावना है कि आप सोचें कि, किसी बोये हुए बीज का फल हो सकता है। ऐसा नहीं सोच पायेंगे। संभावना यही है कि पत्थर को भी आप एक गाली ज़रूर देंगे, और कभी ख्याल भी नहीं करेंगे कि पत्थर को दी हुई गाली भी फिर बीज बो रहे हैं।

सवाल यह नहीं है, किसको गाली दी। सवाल यह है कि आपने गाली दी। वह वापस लौटेगी।

सम्भल-उ.प्र.। भाजपा के पूर्व विधायक सत्य प्रकाश गुप्ता को जन्माष्टमी की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. राखी, ब्र.कु. हरनाम तथा अन्य।

मोतिहारी-बिहार। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के पुण्य स्मृति दिवस पर ख्वाब फाउण्डेशन द्वारा आयोजित समारोह में आध्यात्मिकता, समाज सेवा एवं पत्रकाति के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए ब्र.कु. अशोक वर्मा,सदस्य,मीडिया प्रभाग को शॉल पहनाने के पश्चात् प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित करते हुए जिला स्कूल इंटर कॉलेज की प्राचार्या बहन शशिकला। साथ हैं ई. मुन्ना कुमार।

रूद्रपुर-उत्तराखण्ड। मिलटेक कंपनी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कंपनी चीफ हेमंत जैन व सुभाष शाह, ब्र.कु. सूरजमुखी, ब्र.कु. पुलकित तथा ब्र.कु. वर्षा। सभा में मिलटेक कंपनी के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं नगर के वरिष्ठ उद्योगपति।

पदमपुर-राज.। सुरेन्द्र पाल सिंह,लेबर एंड एम्प्लॉयमेंट,फैक्ट्री एंड बॉयलर्स इंस्पेक्शन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वंदना।

नरवाना-हरियाणा। न्यायाधीश को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीमा।

मुंगरा-बादशाहपुर(उ.प्र.)। 'अखिल भारतीय बेटी बचाओ सशक्त बनाओ अभियान के इलाहाबाद से चलकर मुंगरा बादशाहपुर पहुँचने पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् एस.डी.एम. सत्येन्द्र कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनिता।